P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# स्वामी दयानन्द सरस्वती की शैक्षिक विचारधाराः एक अध्ययन

**सारांश**

भारत माँ की गोद में समय–समय पर बहुत से महापुरूषों का जन्म हुआ है उन्हीं में से एक महान महापुरूष स्वामी दयानन्द सरस्वती भी हुए है स्वामी दयानन्द सरस्वती की हार्दिक अभिलाषा थी कि वैदिक सूत्रों का वर्तमान जीवन की समस्याओं से संघर्ष स्थापित हो जाय इसके लिए शिक्षा में उन्होंने सकारात्मक कार्यक्रम की झलक देखी और जन–जन में शैक्षिक चेतना का होना आवश्यक माना, उन्होंने स्वीकार किया था कि शिक्षा एक ऐसा शक्तिशाली शास्त्र है जिसके द्वारा हिन्दू समाज में प्रचलित कुरीतियों को अधिक प्रभावशाली ढंग से समाप्त करना संभव है अतः सुधार आंदोलन में शिक्षा को समाज में पुनरूत्थान का प्रभावशाली अंग बनाया गया। स्वामी जी की सबसे बड़ी देन वर्ण, जाति, वर्गों में बटे भारतीय समाज को संगठित करने तथा समाज में परिव्याप्त कुरीतियों, धार्मिक आडंबरों तथा विषमताओं को दूर कर समाज को सटीक रास्ते पर ले जाना तथा स्त्री तथा निम्न जाति के साथ–साथ हो रहे भेदभावों को दूर कर उन्हें उचित सम्मान तथा शिक्षा देना रहा है पुनरूत्थान के युग के नेताओं और समाज सुधारकों में दयानन्द जी का स्थान अति महत्वपूर्ण है।

**दिनेश प्रताप सिंह**
व्याख्याता,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
आई.एम.आर.,
गाज़ियाबाद, उ.प्र., भारत

**मुख्य शब्द :** सकारात्मक, कुरीतियों, पुनरूत्थान, विषमताओं, आडंबरो।

**प्रस्तावना**

उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय संस्कृति अपने पतन पर जा रही थी, भारतीय चेतना पूर्णतः सुशुप्त थी और इस चेतना को सुशुप्त बनाये रखने का श्रेय तत्कालीन अंग्रेज शासकों को था जो भारतीय संस्कृति व चेतना को जाग्रत न होने देनें के लिए पूर्णत्य से कटिबद्ध थे। उसी समय एक महान तेजस्वी व महान महापुरूष का जन्म 1824 ई0 में काठियावाड़ में हुआ जिनका बचपन का नाम मूलशंकर था। मूलशंकर ने वेदांग तथा पाणिनी का व्याकरण का यथेष्ट ज्ञान प्राप्त करके योग द्वारा प्रचण्ड विद्धता, गंभीर अध्ययन, अकाट्य तार्किकता व कठोर यथार्थवादी विचारधारा से सुशुप्त भारतीय आत्मा को झकझोरा। महर्षि दयानन्द, पुरातन भारतीय संस्कृति को पुनः सम्मानित स्थान देनें का, अपनी खोई शक्ति पहचानने का तथा पलायनवादी दृष्टि के स्थान पर अभ्युदय वादी दृष्टि को अपनाने के लिए भारतीयों का आह्वान किया इस महान शिक्षाविद् की भावनाएं अपनी संस्कृति की रक्षा हेतु एक आदोलन के रूप में प्रस्फुटित हो उठी 'सत्यार्थ प्रकाश' व 'ऋग्वेद नाग्य भूमिका' स्वामी दयानन्द के सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है इनके अध्ययनों से पता चलता है कि स्वामी जी वैदिक उपदेशों के सच्चे महत्व को जनसाधारण के लिए सुलभ बनाना चाहते थे? उनका विश्वास था कि ईश्वर सत् चित् व आनन्द का प्रतीक है। वह निराकार अनन्त व सर्वशक्तिमान है वही संसार का कर्ता, भर्ता व हर्ता है। वही सृष्टि का नियमन करता है। तथा वही प्रत्येक आत्मा को उसके कर्मो के अनुसार फल देता है। स्वामी जी का यह भी विश्वास था कि जीवात्मा व ईश्वर दोनों अलग–अलग है। पर दोनों में कुछ समान और कुछ असमान धर्म तथा गुण होने के कारण दोनों में व्याप्त तथा व्यापक सम्बन्ध है। स्वामी जी की भी धारणा थी कि प्रकृति विश्व का भौतिक कारण है। स्वामी जी ने योग दर्शन के आधार पर ईश्वर आत्मा व प्रकृति को अनादि व अनन्त स्थान प्रदान किया। स्वामीजी, वेद, उपनिषद, गीता आदि ग्रन्थों को वास्तविक मानते थे उन्होंने वैदिक युग की ओर पुनरावर्तन की स्पष्ट घोषणा की इसलिए भारत के मार्टिन लूथर कहलाए।

**अध्ययन के उद्देश्य**

1. छात्रों को स्वामी जी की शिक्षाओं के लाभ व महत्व को बताना।
2. वैदिक संस्कृति व धर्म की अवधारणा से परिचित कराना।
3. स्वामी दयानन्द सरस्वती की शैक्षिक अवधारणा को परिभाषित करना।

4. स्वामी दयानन्द जी के द्वारा किये गये समाज सुधार का अध्ययन करना।
5. स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षा की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
6. स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं का समाज पर प्रभाव का अध्ययन करना।

**शिक्षा का अर्थ**

स्वामी दयानन्द सरस्वती का विचार शिक्षा के प्रति आदर्शवादी था वे शिक्षा को आत्मविश्वास का साधन मानते थे। उनके अनुसार ''जिससे विद्या, सभ्यता, धार्मिकता में बढ़ोत्तरी होने और अविद्या दोष छूटे, उसको शिक्षा कहते है अनित्य में अनित्य और नित्य में नित्य, अपवित्र में अपवित्र और पवित्र में पवित्र, दुख में दुख, सुख में सुख, आत्मा में अनात्मा और आत्मा में आत्मा का ज्ञान होना विद्या है अर्थात जिससे पदार्थो का यथार्थ स्वरूप बोध हो वह विद्या और जिससे तत्व स्वरूप न जान पड़े वह अविद्या कहलाती है।'' दूसरे शब्दों में ''शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा पदार्थ के स्वरूप का यथावत ज्ञान प्राप्त करते हुए वांछनीय गुणों के विकास द्वारा स्वयं अपने तथा दूसरों के जीवन को सुखी बनाया जा सके। इस प्रकार स्वामी जी के अनुसार शिक्षा सबसे महान तथा सबसे मूल्यवान गुण है उनका कथन है– शिक्षा के बिना मनुष्य केवल नाम मात्र का मनुष्य है शिक्षा प्राप्त करना, सद्गुणों का बनना, ईर्ष्या से मुक्त होना तथा धार्मिकता का उत्थान करते हुए व्यक्तियों के कल्याण का उपदेश देना मनुष्य का परम कर्तव्य है।

**शिक्षा के उद्देश्य**

स्वामी जी शिक्षा के द्वारा सर्वांगीण विकास चाहते थे उन्होंने शिक्षा में शारीरिक, मानसिक नैतिक सभी पक्षों को प्रधानता दी है जहाँ जीवन की व्यवहारिकता हेतु मानव को तैयार करना चाहा, वहां उसे आत्म साक्षात्कार हेतु भी प्रेरित किया है। स्वामी जी के अनुसार ''जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साथ ही साथ जानता है वह अविद्या अर्थात् कर्मोपासना से मृत्यु को जीतकर विद्या अर्थात् ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। स्वामी जी शिक्षा के उद्देश्यों के आत्मानुभूति के उद्देश्य को भी महत्व प्रदान किया है। तत्कालीन परिस्थितियों से संस्कृति की रक्षा हेतु स्वामी जी ने शिक्षा का उद्देश्य वैदिक धर्म और संस्कृति का पुनरूत्थान भी घोषित किया।

**आत्मानुभूति**

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने प्राचीन ऋषियों व मनीषियों की भांति बताया कि शिक्षा का प्रथम उद्देश्य आत्मानुभूति है। आत्मानुभूति का अर्थ है– अपनी आत्मा को पहचानना। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए स्वामी जी सभी को अनिवार्य शिक्षा देना चाहते थे चाहे वह महिला हो या पुरूष, जिससे उसका सर्वांगीण विकास हो सके और व्यक्ति को अपनी आत्मा के विषय में सच्चा ज्ञान प्राप्त हो सके।

**वैदिक धर्म तथा संस्कृति का पुनरूथान**

स्वामी जी के युग में लोग पौराणिक हिन्दू धर्म में अविश्वास उत्पन्न हो जाने के कारण ईसाई धर्म को स्वीकार करते जा रहे थे। स्वामी दयानंद ने लोगों को इस धर्म संकट से बचाने के लिए शिक्षा का उद्देश्य वैदिक धर्म तथा संस्कृति का पुनरूत्थान घोषित किया उनका विश्वास था कि इस उद्देश्य के अनुसार शिक्षा देनें से लोगों को अपने प्राचीन वैदिक धर्म तथा सांस्कृतिक ज्ञान हो जायेगा।

**शारीरिक विकास**

स्वामी जी मनुष्यों का शारीरिक विकास, करना शिक्षा एक अत्यन्त महत्वपूर्ण उद्देश्य मानते थे इसके लिए ब्रहमचर्य, पालन व्यायाम, खेलकूद तथा यौगिक क्रियाओं पर विशेष बल दिया है। उनके शब्दों में– ''यदि ब्रहमचर्य का अच्छी तरह से पालन किया जाये तो इससे शरीर, मस्तिष्क, तथा आत्मा का बल बढ़ता है।''

**मानसिक विकास**

स्वामी जी का मन था कि बालक को मानसिक दृष्टि से विकसित करने के लिए माता को पांच वर्ष तथा पिता को आठ वर्ष तक घर पर ही शिक्षा देनी चाहिए। इसके पश्चात् बालक को पाठशाला भेज देना चाहिए।

**नैतिक विकास**

स्वामी दयानन्द का विश्वास था कि व्यक्ति सत्य का अनुसरण उसी समय कर सकेगा जब उसका नैतिक विकास हो जाये। उनके शब्दों में हमारा उद्देश्य केवल यह है कि मानव जाति उन्नति करें तथा फले–फुले। मनुष्य इस बात का ज्ञान प्राप्त करें कि सत्य क्या है और असत्य क्या है? वे असत्य का त्याग करे व सत्य को स्वीकार करें।

**आदर्श चरित्र का विकास**

स्वामी जी बालक के चरित्र निर्माण को शिक्षा का एक उद्देश्य मानते है इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि माता–पिता तथा गुरूजन सभी चरित्रवान हो तथा वे सभी अपने उच्च विचारों आदर्शो तथा उपदेशों के द्वारा बालक के चारित्रिक विकास की ओर ध्यान दें।

**समाज सुधार की शक्ति का विकास**

स्वामी जी बालकों में सामाजिक सुधार की प्रविष्ट को बढ़ावा देनें पर हमेशा जोर देते रहे। अपने बच्चों में सावधानी के साथ दुर्गुणों से हमेशा दूर रहना चाहिए। माता–पिता को बालकों में आत्म संयम, ज्ञान, प्रेम तथा उत्तम संगति की आदत का विकास करना चाहिए। बालकों को कष्टदायक खेलों से बिना कारण रोने तथा हसनें, झगडे, आनन्द उदासीनता किसी वस्तु से आवश्यकता से अधिक लगाव ईर्ष्या, द्वेष आदि से दूर रखना चाहिए।

**स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षा की प्रासंगिकता**

स्वामी दयानन्द की शिक्षा व आज के वर्तमान युग में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान है जिसके द्वारा बालकों में ध्वनि बोध, उच्चारण व्याकरण के साथ ही साथ रामायण महाभारत, वेदों, गीता, बीजगणित, रेखागणित, श्रृगर्भविद्या, खगोलविद्या के साथ–साथ अन्य राष्ट्रीय एकता, धर्मोपदेश, पथप्रदर्शन, पाण्डित्य, कर्म–काण्ड़ पूजापाठ, हवन के द्वारा बालकों के मस्तिष्क को आजीवन व ताकतवर बनाया जा सकता है।

स्वामी जी की शिक्षाओं का वर्तमान युग में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण प्रासंगिता है उनके शिक्षा सिद्धान्तों को आधार मानते हुए देश के कोने कोने में बालकों तथा

बालिकाओं के लिए अलग–अलग अनेक शैक्षिक संस्थायें खोली गयी कागड़ी तथा ज्वालापुर महाविद्यालय हरिद्वार तथा वृन्दावन गुरूकुल बालकों के लिए तथा देहरादून बडौदा तथा सासनी (अलीगढ़) के गुरूकुल बालिकाओं के लिए इस सम्बन्ध में उपयुक्त उदाहरण है। ये सभी संस्थायें आप भी अपना अपना कार्य वैदिक दर्शन को आधार मानते हुए सफलतापूर्वक कर रही है।

**सन्दर्भ ग्रंथ सूची**

*सक्सेना, एन.आर. स्वरूपः शिक्षा के दार्शनिक व समाजशास्त्रीय सिद्धान्त।*

*त्यागी व पाठकः शिक्षा के सिद्धान्त।*

*लाल, त्रिपाठीः शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त व सामाजिक आधार*

*सिंह, एन.पीः शिक्षा की दार्शनिक पीठिका।*

*वसु, दुर्गादासः भारत का संविधान–एक परिचय।*

*नारायण, जयप्रकाशः सामुदायिक समाज रूप और चिन्तन।*

*श्रीवास्तव, शैलेन्द्रः दयानन्द सरस्वती की विचारधारा।*